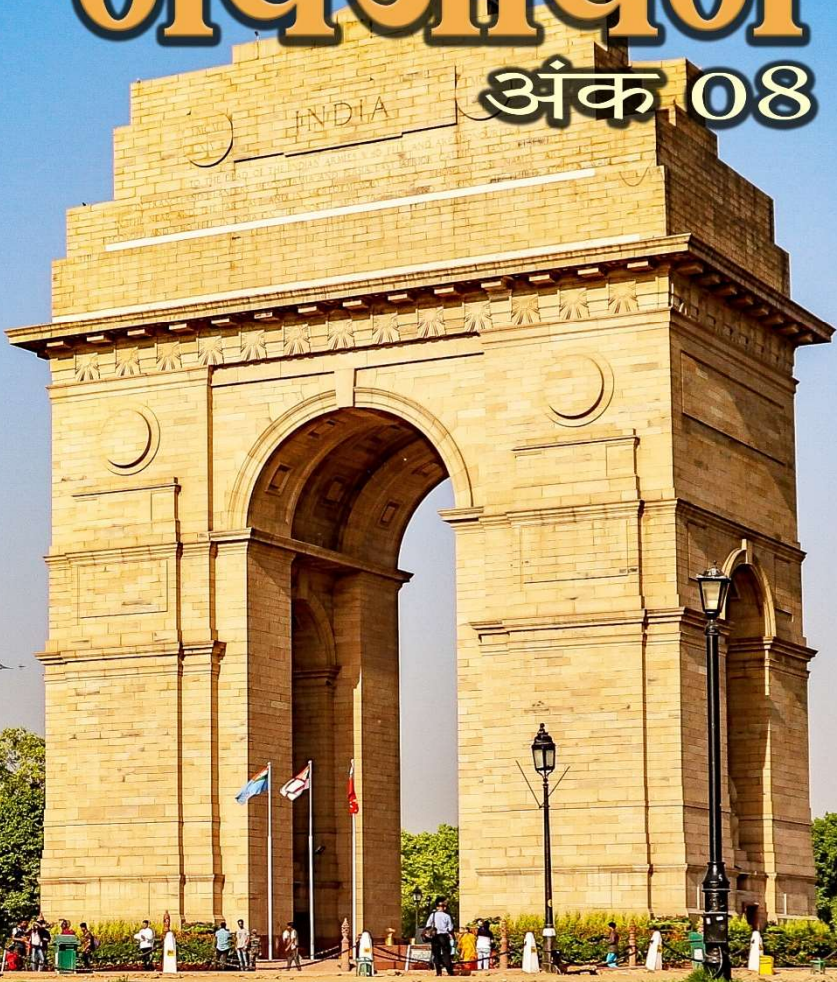


नवजीवन

अंक 08



सफल मसीही जीवन के लिये प्रेरणा

नवजीवन

सफल मसीही जीवन के लिये
बाईबिल से मार्गदर्शन

मुख्य सम्पादक: शास्त्री जे सी फिलिप
कार्यवाही सम्पादक: शास्त्री सनीश चेरियान

सम्पादक मण्डल
रंजीत कुमार बाघ (ग्वालियर)
इवेंजेलिस्ट राजकुमार (फ़ीरोजपुर)

नवजीवन प्रकाशन

आवरण चित्र: पब्लिक डोमेन

बाइबिल परिचय 1

शास्त्री जॉन्सन सी फिलिप

प्रभु के नाम की स्तुति हो। आज मैं पवित्र बाइबल या पवित्र शास्त्र के बारे में कुछ बातें आप सब को बताना चाहता हूं। पवित्र बाइबल को हम सब नियमित रूप से पढ़ते हैं और मनन करते हैं। प्रभु का यह वचन हम में से हर व्यक्ति को जीवन में बहुत अधिक अनुग्रह और आशीष देता है।

इस तरह से प्रतिदिन बाइबल पढ़ना और मनन करना हम सबके लिए जरूरी है। यह प्रभु की आज्ञा है। इस आज्ञा का पालन करते समय हमारे मन में कई बार यह प्रश्न आता है कि प्रभु ने अपने इस महान वचन को किस तरह से और किन लोगों के द्वारा हम सबको दिया है। इन बातों के जाने

बिना भी हम प्रभु के वचन का अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन यदि ये अतिरिक्त बातें हम जान लें तो हमारा विश्वास और भी गहरा हो सकता है। इन बातों को मन में रखकर मैं बाइबल की 66 पुस्तकों के बारे में एक परिचय देना चाहता हूं। सबसे पहले तो पुराने नियम को खोल लें और उसके शुरू की पांच पुस्तक देखें।

इन पुस्तकों के नाम हैं: उत्पत्ति, निर्गमन, लेव्यव्यवस्था, गिनती और, व्यवस्था-विवरण। देखते हैं। इन पांच पुस्तकों को हमेशा एक साथ रखा जाता है और पंच ग्रंथ कहा जाता है क्योंकि इन पांचों का लेखक एक ही व्यक्ति है। वह व्यक्ति है प्रभु के महान नायक मूसा। मूसा एक यहूदी थे जिनको मिस्र की महारानी ने पाला था जिससे कि मूसा मिस्र का अगला

राजकुमार और अगला बादशाह बन सके। लेकिन जब मूसा 80 साल के हुए तब प्रभु ने उनको बुलाया और बोला कि तुम मिस्र के बादशाह नहीं बल्कि मेरे लिए जनता का नायक बनोगे। इस तरह से मूसा उस समय जहां थे वहां से प्रभु ने उनको वापस मिस्र देश में भेजा जिससे कि वह वे अपने लोगों को गुलामी से छुड़ा सकें। मूसा के अपने लोगों को हम यहूदी या इसराइली लोग भी कहते हैं। ये लोग लगभग 400 साल से मिस्र देश में रह रहे थे इन 400 सालों के लगभग आखिरी हिस्से में मिस्री लोग यहूदियों को गुलाम बनाकर उनके द्वारा कठिन परिश्रम करवाते थे।

गुलामों के रूप में यह परिश्रम इतना कठिन था कि वहां हर जगह रोना और विलाप मच गया। उन लोगों ने अपने प्रभु

की दुहाई दी। बार बार प्रभु से बिनती की कि हे प्रभु हमको इस भयानक स्थिति से छुटकारा दीजिए। प्रभु हमेशा अपने बच्चों का ख्याल रखते हैं और इस कारण उन्होंने अपने बच्चों को वहां से छुड़ाने के लिए एक रास्ता निकाला। यह रास्ता था महान नायक मूसा के द्वारा अपनी जनता को मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर उनको एक ऐसे देश में ले जाएं जहां दूध और शहद की नदियां बहती हैं। प्रभु ने अपने बच्चों से कहा भी था कि मैं तुमको ऐसा देश दूंगा जहां दूध और शहद की नदियां बहती हैं।

निर्गमन की पुस्तक में हम देखते हैं कि महानायक मूसा उनको गुलामी से छुड़ाकर प्रभु ने उनसे जो वाचा बांधी थी उसके अनुसार कनान नाम के देश में ले गए। कनान में जाकर प्रभु की आज्ञा के

अनुसार वे लोग बस गए और प्रभु की इच्छा के अनुसार जीवन बिताने लगे। यह सारी घटनाएं हम उत्पत्ति से व्यवस्था विवरण आदि में देखते हैं। इनके बाद अगली पुस्तकें आती हैं जिनके नाम हैं: यहोशू, न्यायियों, रूत, पहला शमुएल, दूसरा शमुएल, पहला राजा, दूसरा राजा, पहला इतिहास और दूसरा इतिहास। इसके बाद एज्रा, नहेमियाह, एस्तर आते हैं। ये सारी पुस्तकें कनान नामक देश में प्रभु के लोगों के इतिहास को बताते हैं। इसके बाद आती हैं अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, और श्रेष्ठ गीत नामक पुस्तकें। ये सारी पुस्तकें काव्य के रूप में लिखी गई हैं और प्रभु के लोग इनको काव्य के रूप में या गीतों के रूप में प्रयोग में लाते थे। इसके बाद यशायाह,

यिर्मयाह, अदि से लेकर मलाकी नमक पुस्तक देखते हैं। प्रभु ने जिन भविष्य वक्ताओं को अपने लोगों के बीच में भेजा था ये पुस्तक उनकी भविष्यवाणी का लिखित रूप हैं। इस तरह से 39 पुस्तकों से मिलकर पुराना नियम बना है।

नए नियम में जब हम आते हैं तब उसके शुरू की चार पुस्तकें (मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना) हमको प्रभु यीशु की जीवनी प्रदान करते। इन चार पुस्तकों में प्रभु की चार जीवनी अलग-अलग तरह से लिखी गयी हैं जिनके द्वारा हम प्रभु के जीवन के हर पहलू को अच्छी तरह समझ सकें।

पांचवी पुस्तक को प्रेरितों के काम कहा जाता है? उसमें मसीही मंडली के प्रारम्भ के बारे में हम देखते हैं। इसके बाद रोमियो

से लेकर यहूदा नामक पुस्तके हम देखते हैं। यह सब नए नियम युग में प्रभु के द्वारा दिए गए उपदेशों का सारांश और व्याख्यान है। सबसे अंत में यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य नामक पुस्तक देखते हैं जिसमें भविष्य के बारे में प्रभु ने अपने बच्चों को जानकारी दी है। इस तरह कुल मिलाकर 66 पुस्तकों से मिलकर प्रभु का वचन पवित्र बाइबिल बना है। मुझे उम्मीद है कि यह जानकारी आपको बहुत अधिक आत्मिक आनंद देगी।

प्रभु ने मदद की तो आने वाले पाठों में हम इन 66 पुस्तकों को एक-एक करके देखेंगे जिससे कि जो भी व्यक्ति प्रभु का वचन पढ़ता है उसको एक नजर में यह याद आ जाये कि किस पुस्तक में किस तरह की जानकारी है और इस जानकारी के द्वारा

आप अपने जीवन में बहुत अधिक
आत्मिक अनुग्रह पा सकें।

~~~~~

## इस ईपत्रिका को शेयर करें

प्रिय मित्रों हमआप कितनी सारी  
अनावश्यक खबरों कहानियों को दुसरो के  
साथ शेयर करते हैं. उनका समय बर्बाद  
करते हैं

क्यों न इस पत्रिका को अपने मित्रों के साथ  
शेयर करके उनके आत्मिक जीवन में  
योगदान दें. क्या मालूम आप के इस काम  
के द्वारा कितने लोगों को एक नवजीवन का  
अनुभव हो जाए!

## पाप पर विजय

Evg. Raj Kumar, Ferozpur

आज बहुत से लोग पाप करने से ज्यादा सही जीवन जीने से डरते हैं. लोग पाप पर विजय को बढ़ावा देने वाली किसी भी बात से निराश हो जाते हैं। जब मनुष्य विजयी मसीही जीवन जीने का दावा करते हैं, तो वह पूरे जोश से पाप का बचाव करते हैं। जब मनुष्य इस बात पर जोर देते हैं कि मसीहियों को उनके फलों से जाना जा सकता है तो वह उन पर विधिवाद का आरोप लगाते हैं।

जब लोग पश्चाताप को सुसमाचार का हिस्सा मानते हैं, तो इससे उनका खून खौल उठता है। यह प्रतिक्रिया क्यों है? वह अपने मन में कर्मों को दबाकर विश्वास की

रक्षा कर रहे हैं। वह सोचते हैं कि पश्चाताप पर जोर देना या फल की तलाश करना या जीत की उम्मीद करना ही विश्वास के विपरीत कार्यों का दावा करना है।

लेकिन यह विश्वास की गलतफहमी है विश्वास पाप का उतना ही विरोधी है जितना काम करने का । विश्वास वह विजय है जो संसार को जीत लेती है । ( 1 यूहन्ना 5:4 ) विश्वास की ढाल दुष्टों की हर आग को बुझाने में सक्षम है। ( इफि 6:16 ) विश्वास पाप के सुख के बदले परमेश्वर के लोगों के साथ दुख को चुनता है। ( इब्रानियों 11:25) विश्वास वह उड़ाऊ पुत्र है जिसने होश में आते ही सूअरों का खाना और सूअरों को चराना सब पीछे छोड़ दिया। (लूका 15:17-20 ) पर कुछ लोग कहते हैं विश्वास कार्यों के विपरीत है। "आमीन" विश्वास

और कार्यों में अंतर करना सुसमाचार के आधार का हिस्सा है। इनका भेद कर पाना शुभ समाचार के लिए घातक है। हालांकि चीजें जैसे कि विश्वास की आज्ञाकारिता " (रोमियों 1:5) और प्रेम से कार्य करने वाला विश्वास" (गला 5:6) यह विश्वास की श्रेणी में आते हैं ना कि कार्यों की श्रेणी में।

जो विश्वास करता है उसे अविश्वास के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। पश्चाताप, परिवर्तन, परमेश्वर के भय में पवित्रता सिद्ध करना, और ऐसी ही सभी चीजें विश्वास की अभिव्यक्ति है।

विधिवाद का मार्ग ( धार्मिक अविश्वास की एक किस्म) खुशी से धार्मिक रूपों का पालन करेगा और अच्छे कार्यों को बिखरेगा, लेकिन यह कभी भी बाइबल के

पश्चाताप, बाइबल के रूपांतरण, या बाइबल की पवित्रता का उत्पादन नहीं करेगा। केवल वे जो नया जन्म लेते हैं, वह धार्मिक जीवन जीते हैं। (1 यूहन्ना 2:29)

उम्मीद है कोई मुझे गलत नहीं समझेगा मैं पूर्णता के लिए बहस नहीं कर रहा हूं हम पुनरुत्थान तक कभी भी सिद्ध नहीं होंगे हम हमेशा गलतियां करते हैं। हम स्वयं को वृद्ध व्यक्ति के समान पुनरावर्तन को प्रकट करते हुए पा सकते हैं। मैं केवल इस बात की ओर इशारा कर रहा हूं कि सुअरों का खाना हमारी किस्मत नहीं है हम सुअरों के खाने को छोड़ सकते हैं, हम अपने आसपास के पापों पर जय पाकर विजय की ओर चल सकते हैं। हम स्पष्ट भक्ति और पवित्रता में चल सकते हैं और अपने जीवन को निर्वाह कर सकते हैं।

# God's Inspired Scripture

Dr. Saneesh Cherian

Every family needs someone to unite it, and every group of people also need something to unite it. In the same way, every faith group also needs a factor to unite it. For the Christian faith, it is the Bible that is the uniting factor.

However, there is something unique with the Bible that is not there with any other factor that unites people. Inspiration of the Bible is that unique factor. Of course, the word inspiration can confuse many people. For example, we often say that a picture, a place, or a person has given us much inspiration. However, when we use that word in

relation to the Bible, it is used in a totally different way.

In 2 Timothy 2:16 we read, "All scripture is given by inspiration of God, and is profitable for doctrine, for reproof, for correction, for instruction in righteousness". Here the word is used in the sense that God gave His word to the writers the way they breathe -- as a totally integrated part of their being, and that they then wrote it exactly the way God gave it to them. This was not some kind of a mechanical dictation, nor did God use these writers the way one uses a typewriter to type what one has in mind. Rather, in a perfectly natural way the Spirit of God allowed them to write exactly what He wanted them to pen down.



Since the Holy Bible has come to down to us in a unique way, the book is unique in many ways and we need to understand these things clearly. Some of these are:

- God has given Scripture in Old Testament times only through the Jewish Nation. In Psalms 147 verses 19 and 20 we read "He sheweth his word unto Jacob, his statutes and his judgments unto Israel. He hath not dealt so with any nation: and as for his judgments, they have not known them. Praise ye the LORD"
- In the New Testament period, as is obvious, He has given us the Scripture only through Christians.
- There is no revelation outside the Bible. They have never understood it, and their

scriptures do not contain Holy Spirit inspired revelation.

This means that the inspiration of the Holy Spirit has added several other qualities to this book that is not found in any other book. Some of these qualities are:

- Bible is totally inerrant or free of errors. There are no scientific or historical errors in the Scripture.
- The Bible is totally infallible. If it makes a pronouncement on any subject, that pronouncement is infallible. It is always right and nobody has the authority to change it.
- The Bible is the final court of authority for faith and conduct for believers. If it makes a statement, we accept it whether we understand it or not. An attempt

to understand should be made, but our ability to understand should never become the criterion of its authority.

Human sin nature is in rebellion against God. It dislikes anything that claims to be from God. More so if that Scripture claims to be infallible and inerrant. Thus worldwide there is a movement to challenge and attack the Scripture. The problem is not with the Scripture but rather with the rebellion in human heart.

However, the inspiration, authority, infallibility and inerrancy are not negotiable doctrines. If someone does not want to believe them, then he cannot claim to be a committed Christian. He might be a born-again person but his commitment and obedience is to be questioned.

He is in immediate need to subdue his rebellious mind to the discipline and discipling of the Scripture.

Summary: Have you ever seen a person who questions the reliability of the Bible? Be sure that this person is in rebellion somewhere in his/her life. The doctrine of inspiration of the Scripture is an essential foundation for, and of, the Christian faith.

~~~~~

आपके प्रश्नोत्तर

यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर चाहते हैं तो अपने प्रश्न 999 519 8690 पर व्हाट्सएप द्वारा भेज दें. हम इस पत्रिका में जरूर उसका उत्तर देंगे.

आपके प्रश्न

प्रश्न: बाइबिल को नियमित रूप से, या प्रतिदिन, पढ़ने की जरूरत क्या है. साल के आरंभ में साल भर के लिये एक बार ही पढ़ लें तो क्या नुकसान है?

उत्तर: इस के उत्तर को समझने के लिये मैं पलट कर आप से एक बात पूछना चाहता हूं: नियमित रूप से खाना खाने के बदले साल के आरंभ में साल भर का का खाना जनवरी एक को एक साथ क्यों न खा लें? उत्तर यह है कि हमारे शरीर की रचना ऐसी है कि उसे नियमित भोजन की जरूरत पडती है.

हमारे आत्मिक जीवन की रचना भी इस तरह से हुई है कि हमें नियमित रूप से

आत्मिक भोजन ग्रहण करना जरूरी होता है.

सांसारिक भोजन नियमित रूप से न लें तो शरीर कमजोर हो जाता है. उसी तरीके से जब आत्मिक भोजन नियमित रूप से न लें तो आत्मिक जीवन कमजोर हो जाता है.

एक बात और. जब लोगों को "जंकफूड" की आदत पड जाती है तो वे स्वस्थ भोजन की उपेक्षा करते हैं. उनको लगता है कि वे पेट भर रहे हैं, लेकिन वे नहीं पहचानते हैं कि वे पेट में कचरा और जहर भर रहे हैं. आत्मिक जीवन में भी ऐसा ही है. हमारे चारों ओर तमाम प्रकार का अत्मिक कचरा है जिससे हमें बचना चाहिये. उसके बदले सिर्फ स्वस्थ आत्मिक भोजन का सेवन करना चाहिये.

हम से सम्पर्क करें

अपने पत्र, प्रश्न, और 200 शब्द से कम के लेख आदि हम को भेजें. लेख सरल और सुलभ हिन्दी में होना जरूरी है. नवजीवन पत्रिका "पादरी हिन्दी" और क्लिष्ट हिन्दी से परहेज करती है.

यदि आप चाहते हैं कि लोग आपके लेखों को पढ़ें और लाभ पायें तो ऐसी सरल एवं सुलभ भाषा में लिखें जिसे जनसाधारण समझ सकें.

आईये मिल कर हिन्दी में प्रचुर मात्रा में आत्मिक लेख, कहानियां, कवितायें आदि लोगों तक पहुंचायें.

इस ईपत्रिका को शेयर करें

प्रिय मित्रों हमआप कितनी सारी अनावश्यक खबरों कहानियों को दुसरो के साथ शेयर करते हैं. उनका समय बर्बाद करते हैं. यह जर्बर्दस्ती कचरा फैलाने के समान है.

क्यों न इस पत्रिका को अपने मित्रों के साथ शेयर करके उनके आत्मिक जीवन में योगदान दें. क्या मालूम आप के इस काम के द्वारा कितने लोगों को एक नवजीवन का अनुभव हो जाए!

कचरा फैलाने के बदले स्वस्थ आत्मिक भोजन अधिक से अधिक लोगों के साथ बांटें